इकाई 9 श्रम-विभाजनः दर्खाइम और मार्क्स*

संरचना

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 सामाजिक-आर्थिक परिवेश और श्रम विभाजन से तात्पर्य

9.2.1 सामाजिक-आर्थिक परिवेश

9.2.2 श्रम विभाजन से तात्पर्य

9.2.3 श्रम विभाजन और आर्थिक प्रगति

9.3 श्रम विभाजन पर दर्खाइम के विचार

9.3.1 श्रम विभाजन के प्रकार्य

9.3.2 श्रम विभाजन के कारण

9.3.3 श्रम विभाजन के असामान्य रूप

9.4 श्रम विभाजन पर मार्क्स के विचार

9.4.1 सामाजिक श्रम विभाजन तथा औद्योगिक श्रम विभाजन

9.4.2 औद्योगिक श्रम विभाजन के परिणाम

9.4.3 मार्क्स द्वारा समस्या का हलः क्रांति और बदलाव

9.5 दर्खाइम तथा मार्क्स के विचारों की तुलना

9.5.1 श्रम विभाजन के कारण

9.5.2 श्रम विभाजन के परिणाम

9.5.3 श्रम विभाजन के संबंधित समस्याओं के समाधान

9.5.4 समाज के बारे में दर्खाइम का ''प्रकार्यात्क'' मॉडल और मार्क्स का ''संघर्ष'' मॉडल

9.6 सारांश

9.7 संदर्भ

9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपके लिए संभव होगाः

- दर्खाइम की पुस्तक *डिविज़न और लेबर इन सोसाइटी* में व्यक्त श्रम विभाजन के विचारों का विवेचन करना;
- श्रम विभाजन पर कार्ल मार्क्स के विचार प्रस्तुत करना; तथा
- श्रम विभाजन पद दर्खाइम और मार्क्स के विचारों की तुलना करना।

9.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हमने ''श्रम विभाजन'' पर एमिल दर्खाइम तथा मार्क्स के विचारों में समानताओं और विषमताओं का अध्ययन किया है।

*यह इकाई ESO-13, इकाई 20 से अनुग्रहित एवं संपादित है।

प्रारम्भ में, भाग 9.2 में उस सामाजिक-आर्थिक परिवेश की संक्षेप में चर्चा की जायेगी जिसमें इन दोनों चिंतकों ने अपने विचार व्यक्त किए। इसके पश्चात् ''श्रम विभाजन'' की अवधारणा की व्याख्या की जाएगी।

भाग 9.3 में हमने श्रम विभाजन के संबंध में एमिज दर्खाइम के विचारों को समझने का प्रयास किया है। ये विचार उस ने पी.एच.डी. डिग्री के लिए प्रस्तुत अपने शोध प्रबंध ''द डिवीज़न ऑफ लेबर सोसाइटी'' (1893) में प्रस्तुत किये थे।

भाग 9.4 में इस विषय पर कार्ल मार्क्स के दृष्टिकोण का विवेचन किया जाएगा।

अंतिम भाग 9.5 में इन दोनों विचारकों के दृष्टिकोणों की तुलना की जाएगी।

9.2 सामाजिक-आर्थिक परिवेश और ''श्रम विभाजन'' से तात्पर्य

इन उप-भागों में प्रारम्भ में हमने दर्खाइम तथा मार्क्स के समय की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की जानकारी दी है। इससे उनके विचारों को अच्छी तरह समझने में सहायता मिलेगी। इसके बाद हमने यह जानने का प्रयास किया है कि ''श्रम विभाजन'' से तात्पर्य क्या है और इसमें क्या-क्या बातें शामिल है? श्रम विभाजन क्यों होता है? इस भाग में हमने इन्हीं पक्षों की चर्चा की है।

9.2.1 सामाजिक-आर्थिक परिवेश

दर्खाइम तथा मार्क्स के जीवन-काल में यूरोप में ''औद्योगिक क्रांति'' चल रही थी। इस पाठ्यक्रम में आपने पहले ही पढ़ा है कि औद्योगिक क्रांति के दौरान उत्पादन की तकनीकों में परिवर्तन हुए। छोटे स्तर पर घरेलू और कुटीर उत्पादन के स्थान पर कारखानों में व्यापक उत्पादन होने लगा।

यह परिवर्तन आर्थिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहा। शहरों और उनकी जनसंख्या में बढ़ोतरी हुई और इसके साथ ही गरीबी, अपराध वृद्वि तथा अन्य समस्याएं सामने आई। सामाजिक स्थिरता और व्यवस्था पर आँच आने लगी। परम्परागत सामंतवादी समाज व्यवस्था डगमगा उठी और आधुनिक औद्योगिक समाज का जन्म हुआ। इस बदलते हुए समाज को समझने के प्रयास दर्खाइम और मार्क्स द्वारा किये गये। हमें यह देखना है कि किस प्रकार श्रम विभाजन की प्रक्रिया के प्रति उन्होंने भिन्न दृष्टिकोण अपनाये। यह प्रक्रिया औद्योगीकरण के कारण दिनों-दिन महत्वपूर्ण होती जा रही थी।

आइए, अब हम यह समझने की कोशिश करें कि श्रम विभाजन से तात्पर्य क्या है।

9.2.2 श्रम विभाजन से तात्पर्य

श्रम विभाजन का अर्थ है किसी काम को कई भागों अथवा छोटी प्रक्रियाओं में विभाजित करना। ये छोटी प्रक्रियाएं अलग-अलग व्यक्तियों या समूहों द्वारा संपादित की जाती है। और इस प्रकार काम करने की गति बढ़ जाती है। आइए यह बात हम एक उदाहरण से समझें। एक कमीज़ बनाने के लिए यदि आप पूरा काम अपने आप करें तो बहुत समय लगेगा। यदि कुछ दोस्त भी इस काम में मददगार बन जाएं तो काम बहुत जल्दी निपट जाएगा। एक व्यक्ति कपड़े की कटाई करें, दूसरा मशीन से सिलाई कर दे, तीसरा हाथ की सिलाई का काम कर दे तो उसमें समय और ताकत दोनों की काफी बचत हो जाएगी। जितने समय में एक व्यक्ति अकेले एक कमीज़ तैयार करे उतने समय में मित्रों के साथ मिलकर कई कमीज़े तैयार हो सकती है। इस तरह श्रम का बंटवारा कर समय बचा तथा उत्पादकता भी बढ़ी।

श्रम विभाजन में विशेषता पनपती है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपने काम का विशेषज्ञ हैं, जिससे लागत में बचत होने के साथ-साथ उत्पादकता में वृद्धि होती है।

9.2.3 श्रम विभाजन और आर्थिक प्रगति

स्काटलैंड के अर्थशास्त्री एडम स्थिम ने अपने पुस्तक *वैल्थ ऑफ़ नेशन्स* (1776) में श्रम विभाजन की अवधारणा का व्यवस्थाबद्ध विश्लेषण किर्या स्मिथ का विचार था कि श्रम विभाजन आर्थिक प्रगति का मुख्य स्त्रोत है। यही आर्थिक विकास का वाहन है। कोष्ठक 9.1 में आपको एडम स्मिथ के संबंध में और अधिक पढ़ने को मिलेगा।

कोष्ठक 9.1: एडम स्मिथ

आधुनिक अर्थशास्त्र के संस्थापकों में एडम स्मिथ का नाम गिना जाता है। एडिनबरा (स्काटलैंड) के पास स्थित किर्काल्डी नामक छोटे से शहर में 1723 में उसका जन्म हुआ। किर्काल्डी में उसकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई और 1740 में उसने एडिनबरा विश्वविद्यालय से एम.ए. डिग्री प्राप्त की। इसके पश्चात् वह आक्सफ़ोर्ड गया। 1751 में उसे ग्लास्गों विश्वविद्यालय में नैतिक दर्शन का प्राध्यापक नियुक्त किया गया। इसी पद पर वह 1763 तक रहा और इस दौरान उसने अपनी पहली कृति *द थ्योरी ऑफ़ मॉरल सेंटिमैंटस* भी लिखी।

यूरोप में दो साल रहने के पश्चात् उसने अपनी महान कृति *द वैल्थ ऑफ़ नेशन्स* लिखनी शुरू की। यूरोप में वह अनेक दार्शनिकों से मिला, खास तौर पर फ्रांसीसी दार्शनिक वॉल्टैर, जिनसे वह अत्यंत प्रभावित हुआ। *द वैल्थ ऑफ़ नेशन्स* मार्च 1776 में प्रकाशित हुई। इस कृति में उसने आर्थिक विकास के इतिहास, कारण और सीमाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया। स्मिथ के अनुसार आर्थिक विकास का मूल स्त्रोत इस तथ्य में है कि मनुष्य द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के निरंतर प्रयास होते हैं। स्मिथ के अनुसार आर्थिक विकास की गति बढ़ाने वाली प्रक्रिया श्रम विभाजन है। अपने व्यापक अध्ययन और तीक्ष्ण प्रेक्षण द्वारा इकट्ठा किये गये अनेक आकड़ों का उसने प्रयोग किया जो कि आज भी अर्थशास्त्रियों के लिए उपयोगी हैं।

द वैल्थ ऑफ़ नेशन्स को सामाजिक विज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण कृतियों में गिना जाता है क्योंकि यह प्रतिस्पर्धात्मक और व्यक्तिवादी औद्योगिक पूँजीवादी व्यवस्था का व्यवस्थित अध्ययन करने के पहले प्रयासों में से एक है। इस कृति में समकालीन समाज और सरकार का मूल्यांकन और कड़ी आलोचना भी शामिल हैं। स्मिथ को आर्थिक मामलों में सरकारी हस्तक्षेप से सख्त विरोध था। वह मानता था कि मनुष्यों को अपने आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी स्वतंत्रता देनी चाहिये, जिससे न सिर्फ व्यक्तिगत लाभ बल्कि समाजिक उद्धार भी होगा। इस कृति के प्रकाशन के पश्चात् स्मिथ एडिनबरा में बस गया। 17 जुलाई 1790 को उसका देहांत हुआ। अर्थशास्त्रीय विचार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण हस्ती के रूप में उसे याद किया जाता है।

अभी तक हमने श्रम विभाजन के अर्थ की आर्थिक संदर्भ में व्याख्या की है। इसका सामाजिक पक्ष भी है। एमिल दर्खाइम ने अपनी पुस्तक *द डिवीज़न ऑफ़ लेबर इन सोसाइटी* में इसी समाजिक पहलू का विवेचन किया। अगले भाग में इस पुस्तक के प्रमुख मुद्दों की चर्चा की जाएगी। परंतु पहले बोध प्रश्न 1 को तो पूरा कर लें।

बोध प्रश्न 1

i) निम्नलिखित वाक्यों में खाली स्थान भरिए।

क) औद्योगिक क्रांति के दौरान वस्तुओं के .... उत्पादन के स्थान पर कारखानों में .... उत्पादन होने लगा।

ख) औद्योगीकरण के कारण .... अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा था।

ग) .... ने कहा कि श्रम विभाजन आर्थिक विकास का मुख्य स्त्रोत हैं।

ii) निम्नलिखित वाक्यों के सामने गलत या सही लिखिए।

क) श्रम विभाजन से समय की बरबादी होती है। गलत / सही

ख) दर्खाइम श्रम विभाजन के आर्थिक पहलू का अध्ययन करना चाहता था। गलत / सही

ग) श्रम विभाजन से विशेषज्ञता को बढ़ावा मिलता हैं। गलत / सही

9.3 श्रम विभाजन पर दर्खाइम के विचार

इकाई 18 में हमने पढ़ा कि समाजशास्त्री के रूप में दर्खाइम का मुख्य विषय सामाजिक व्यवस्था तथा एकीकरण रहा। समाज को एक सूत्र में पिरोए रखने वाली शक्ति कौन-सी हैं ? किन बातों के कारण यह एक पूर्ण इकाई बना रहता है? पहले हमने यह देखा है कि दर्खाइम के पूर्ववर्ती विद्वानों जैसे आगॅस्ट कॉम्ट और हर्बर्ट स्पेंसर के विषय पर क्या विचार थे।

ऑगस्ट कॉम्ट की मान्यता है कि सामाजिक तथा नैतिक सर्वसम्मति ही समाज को एक बनाए रखने के लिए जिम्मेदार है। विचारों, मूल्यों, नियमों आदि की समानता मनुष्यों और समाज को एक सूत्र में पिरोए रखती है।

हर्बर्ट स्पेंसर का विचार इससे भिन्न है। उसके अनुसार व्यक्तियों के निजी स्वार्थों के कारण समाज एकजुट बना रहता है। एकताबद्ध रहने से व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति होती है और इस प्रकार सामाजिक जीवन संभव हो जाता है।

किन्तु दर्खाइम के विचार इन दोनों दृष्टिकोणों से मेल नहीं खाते। कॉम्ट के कथनानुसार यदि नैतिक सर्वसम्मति के कारण ही समाज बना रहता है तो आधुनिक औद्योगिक समाज का टिके रहना असंभव है। आधुनिक समाज में विषमता गतिशीलता और कार्यों तथा मूल्यों में विविधता विद्यमान है। ऐसे समाज में व्यक्तिवाद को महत्व दिया जाता है। दर्खाइम ने स्पेंसर के इस कथन का भी खंडन किया कि स्वार्थ के कारण समाज एकजुट रहता है। यदि व्यक्तिगत स्वार्थ ही सब कुछ होता तो उसके कारण पैदा होने वाली अंधी होड़ तथा कटुता के कारण समाज का आधार ही टूट जाता। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे ही हानि की परवाह किए बिना अपने ही फायदे के लिए संघर्ष करता रहता। इस प्रकार टकराव तथा तनाव से समाजिक विखंडन हो जाता।

प्रश्न यह है कि क्या व्यक्तिवाद, सामाजिक एकीकरण तथा सामंजस्य का शत्रु है? क्या औद्योगीकरण से सामाजिक एकता छिन्न-भिन्न हो जाएगी ? दर्खाइम के विचार इससे कुछ भिन्न हैं।

उसके अनुसार औद्योगिक क्रांति से पहले और बाद के समाजों में समाजिक एकता के आधार तथा मूलभूत अलग-अलग रहे हैं। वह यह दिखाता है कि किस प्रकार विषमता, भिन्नता तथा जटिलता के ग्रस्त समाज में विशेषज्ञता अथवा श्रम विभाजन से एकता का संचार होता है। जैसा कि आपने खंड 3 में पढ़ा, ये वे समाज हैं जो सावयवी एकात्मता पर आधारित हैं। अगले उप-भागों में हमने यह जानने की कोशिश की है कि दर्खाइम ने निम्नलिखित संदर्भों में श्रम विभाजन का विवेचन किस प्रकार किया।

i) श्रम विभाजन के कार्य

ii) श्रम विभाजन के कारण

iii) श्रम विभाजन की सामान्य रूपों से भिन्नता अर्थात् असामान्य रूप

9.3.1 श्रम विभाजन के प्रकार्य

जैसा कि आपने पहले पढ़ा है दर्खाइम ने समाजों का निम्नलिखित वर्गीकरण किया :

i) ''यांत्रिक एकात्मता'' पर आधारित समाज

ii) ''सावयवी एकात्मता'' पर आधारित समाज

i) **यांत्रिक एकात्मता**

जैसा कि आपको मालूम है, यांत्रिक एकात्मता से अभिप्राय है समरूपता अथवा एक जैसा होने एक एकात्मता। ऐसी अनेक समरूपताएं तथा घनिष्ठ सामाजिक रिश्तें होते हैं जो व्यक्ति को उसके समाज से बांधे रहते हैं। सामूहिक चेतना अत्यंत सुदृढ़ होती है। सामूहिक चेतना से हमारा अभिप्राय उन समान विश्वासों तथा भावनाओं से है जिनके आधार पर समाज के लोगों के आपसी संबंध परिभाषित होते हैं। सामूहिक चेतना की शक्ति इस प्रकार के समाजों को एकजुट रखती है और व्यक्तियों को दृढ़ विश्वासों और मूल्यों के माध्यम से जोड़े रखती हैं। इन मूल्यों को उपेक्षा या उल्लंघन को बहुत गंभीर माना जाता है। दोषी लोगों को कठोर दण्ड मिलता है। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि यांत्रिक एकात्मता पर आधरित समाज में एकरूपता अथवा समरूपता की एकात्मता है। व्यक्तिगत भिन्नताए बहुत कम होती हैं तथा श्रम का विभाजन अपेक्षाकृत सरल स्तर का होता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार के समाजों में व्यक्तिगत चेतना सामूहिक चेतना में विलीन हो जाती है।

ii) **सावयवी एकात्मता**

सावयवी एकात्मता से दर्खाइम का तात्पर्य है भिन्नताओं एवं भिन्नताओं की पूरकता पर आधारित एकात्मता। एक कारखाने का उदाहरण लें। वहां कामगार तथा प्रबंधक के कार्य, आय, सामाजिक प्रस्थिति आदि में काफी अंतर है। किन्तु साथ ही वे एक-दूसरे के पूरक हैं। श्रमिकों के बिना प्रबंधक का होना व्यर्थ है और श्रमिकों को संगठित होने के लिए प्रबंधकों की आवश्यकता है। उनका अस्तित्व ही एक दूसरे पर निर्भर हैं।

सावयवी एकात्मता पर आधारित समाज औद्योगीकरण के विकास से प्रभावित और परिवर्तित होते हैं। इसलिए श्रम विभाजन इस प्रकार के समाजों का उल्लेखनीय पक्ष हैं। सावयवी एकात्मता पर आधारित समाज वे समाज होते हैं, जिनमें विषमता, भिन्नता तथा विविधता होती है। विषमरूपी समाज में बढ़ती हुई ये जटिलता विभिन्न तरह के व्यक्तित्व में संबंधों तथा समस्याओं में प्रतिबिंबित होती है। ऐसे समाजों में व्यक्तिगत चेतना विशिष्ट हो जाती

है और सामूहिक चेतना दुर्बल होने लगती है। व्यक्तिवाद का महत्व उतरोतर बढ़ता जाता है। यांत्रिक एकात्मता में सामाजिक प्रतिमान का जो बंधन व्यक्तियों पर रहता है, वह ऐसे समाजों में ढीला पड़ जाता है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा स्वायतता का सावयविक एकात्मता पर आधारित समाज में उतना ही महत्व होता है, जितना सामाजिक एकात्मता का महत्व यांत्रिक एकात्मता पर आधारित समाजों में होता है।

क्या इसका अर्थ यह है कि आधुनिक समाज में एकीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है ? दर्खाइम का कहना है कि श्रम विभाजन ऐसी प्रक्रिया है, जो समाज को एकजुट रखने में सहायक होगी। किन्तु यह कैसे होगा ? जैसे कि हमने पहले देखा है, श्रम विभाजन का अर्थ कुछ खास कामों को मिल-जुलकर करना हैं। दूसरे शब्दों में इसे सहयोग कहा जा सकता है। काम में अधिक विभाजन के साथ साथ दो मुख्य परिणाम सामने आते हैं। एक ओर तो प्रत्येक व्यक्ति अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ है जिससे अपने विशेष क्षेत्र में नई पहल तथा सृजन का समावेश संभव है। दूसरी ओर, व्यक्ति की समाज पर अधिकाधिक निर्भरता होती जाती है। सहयोग तथा पूरकता इस प्रकार के समाजों के अनिवार्य तत्व होते हैं। दर्खाइम के अनुसार, इस प्रक्रिया से उत्पन्न सावयविक एकात्मा यांत्रिक एकात्मता की तुलता में उच्च स्तर की होती है। इससे यह संभव होता है कि व्यक्ति अपनी पहल और स्वतंत्रता से काम लें और साथ ही एक-दूसरे से तथा समाज से जुड़े रहें। इस प्रकार जो प्रक्रिया व्यक्तिवाद तथा सामाजिक एकता दोनों के विकास में सहायक हैं, वह हैं श्रम विभाजन। इस अवधारणा के तात्पर्य को पूरी तरह से समझने हेतु सोचिए और करिए 1 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 1

घर-परिवार में श्रम का विभाजन कैसे होता हैं? निम्नलिखित मुद्दों पर लगभग दो पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए। i) कार्य का स्वरूप और विभाजन, ii) घर-परिवार को सुचारू रूप से चलाने के लिए श्रम-विभाजन किस हद तक सहायक अथवा बाधक सिद्ध होता है। यदि संभव हो तो अध्ययन केन्द्र के अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणियों से अपनी टिप्पणी का मिलान कीजिए।

आइए, अब हम दर्खाइम द्वारा बताए गए श्रम विभाजन के कारणों का विवेचन करें।

9.3.2 श्रम विभाजन के कारण

श्रम विभाजन की प्रक्रिया के लिए कौन-से तत्व ज़िम्मेदार हैं या इसके कारण क्या हैं ? दर्खाइम ने इस प्रश्न का समाजशास्त्रीय उत्तर प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार समाज में भौतिक तथा नैतिक सघनता में वृद्धि के फलस्वरूप श्रम विभाजन अस्तित्व में आता है। भौतिक सघनता (material density) से दर्खाइम का अभिप्राय है किसी समाज में व्यक्तियों की संख्या बढ़ना अर्थात् जनसंख्या वृद्धि। नैतिक सघनता (moral density) से तात्पर्य है संख्या में वृद्धि के फलस्वरूप लोगों के परस्पर संबंधों में तीव्रता आना।

भौतिक एवं नैतिक सघनता में बढ़ोतरी के परिणामस्वरूप अस्तित्व के लिए संघर्ष पैदा होता है। यांत्रिक एकात्मता वाले समाज में लोगों में यदि समानता पनपती है तो एक जैसे लाभ और स्त्रोत प्राप्त करने के लिए संघर्ष और प्रतियोगिता भी जन्म लेते हैं। जनसंख्या में वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों में कमी आने से यह होड़ और तेज़ हो जाएगी। किन्तु श्रम विभाजन के फलस्वरूप व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों और कार्यों के विशेषज्ञ बन जाते हैं। इस प्रकार वे सह-अस्तित्व से रहते हैं, तथा एक-दूसरे के पूरक बनते है। किन्तु यह आदर्श स्थिति क्या सदैव बनी रहती हैं ? दर्खाइम का इस संबंध में क्या मत हैं, इसकी भी समीक्षा कर ली जाए।

9.3.3 श्रम विभाजन के असामान्य रूप

यदि-श्रम विभाजन समाज में नई तथा उच्चतर एकात्मता कायम करने में सहायता देता है तो तत्कालीन यूरोपीय समाज में अव्यवस्था क्यों थी ? क्या श्रम विभाजन से समस्याएं पैदा हो रही थी ? दर्खाइम के अनुसार, उस समय श्रम को जो विभाजन हो रहा था, वह सामान्य प्रकार का नहीं था, जिसके बारे में उसने लिखा था। समाज में असामान्य प्रकार का श्रम विभाजन हो रहा था या सामान्य श्रम विभाजन के विपरीत काम हो रहा था। संक्षेप में इनमें निम्नलिखित असामान्य रूप शामिल थे।

i) **प्रतिमानहीनता (anomie)**

इसका अर्थ है एक ऐसी स्थिति जिसमें सामाजिक नियम निरर्थक बन गये हैं। भौतिक जीवन में तेज़ी से बदलाव आता है, परन्तु नियम, रीति-रिवाज तथा मूल्य उसी गति से नहीं बदलते। ऐसा लगता है कि नियम और प्रतिमान पूरी तरह टूट गये हैं। कार्यक्षेत्र में यह स्थिति कामगारों तथा प्रबंधकों के बीच टकराव के रूप में प्रकट होती है। काम में गिरावट आती है, व्यर्थ के काम होते हैं तथा वर्ग-संघर्ष में वृद्धि होती है।

सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि लोग काम करते हैं और उत्पादर भी करते हैं, किन्तु उन्हें अपने काम की कोई सार्थकता प्रतीत नहीं होती। उदाहरण के लिए कारखाने में असेम्बली लाइन के श्रमिकों को दिनभर कील ठोंकने, पेंच कसने जैसे सामान्य तथा उकता देने वाले काम करने पड़ते हैं। उन्हें अपने काम की कोई सार्थकता नज़र नहीं आती। उन्हें यह एहसास नहीं कराया जाता कि वे कोई उपयोगी काम कर रहे हैं। उन्हें यह भी नहीं बताया जाता कि वे समाज के महत्वपूर्ण अंग है। कारखानें के काम से संबंधित नियमों और विधियों में इतना परिवर्तन नहीं किया गया कि श्रमिकों के काम को सार्थक माना जाए और उन्हें यह अनुभूति हो कि समाज में उनका भी महत्वपूर्ण स्थान है।

ii) **असमानता (inequality)**

दर्खाइम के अनुसार, अवसर की असमानता पर आधारित श्रम विभाजन स्थायी एकता लाने में विफल रहता है। श्रम विभाजन के इस प्रकार के असमान्य रूप से व्यक्तियों में समाज के प्रति कुंठा और नाराज़गी पैदा होती है। इस प्रकार तनाव, कटुता, द्वेष तथा विरोध-भाव पनपने लगते हैं। भारतीय जाति-व्यवस्था को असमानता पर आधारित श्रम विभाजन का उदाहरण माना जा सकता है। लोगों को अपनी क्षमता नहीं बल्कि जन्म के आधार पर विशेष प्रकार के काम करने पड़ते है। यह स्थिति उन लोगों के लिए अत्यंत दुखदायी हैं, जो कुछ अन्य संतोषप्रद तथा लाभप्रद काम करने के इच्छुक हैं, किन्तु उचित अवसरों से वंचित हैं।

iii) **अपर्याप्त संगठन**

इस असामान्य रूप में श्रम विभाजन का मूल उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। काम समुचित रूप से संगठित तथा समन्वित नहीं होता। कामगार प्रायः निरर्थक कामों में लगे रहते हैं। कार्य एकता का अभाव रहता है। इसलिए एकात्मता भंग हो जाती है और अव्यवस्था फैल जाती है। बहुत से दफ्तरों में आपने अपने कर्मचारियों को खाली बैठे देखा होगा। कई लोगों को तो पता ही नहीं होता कि उनका काम क्या है। जब अधिकतर लोगों को अपने कर्तव्य की जानकारी तक न हो तब सामूहिक कार्य कठिन हो जाता है। श्रम विभाजन से उत्पादकता और एकीकरण में वृद्धि होनी चाहिए। जो

उदाहरण हमने अभी बताया हैं, उससे विपरीत स्थिति बन जाती है अर्थात् उत्पादकता कम होती है तथा एकीकरण का ह्रास होता है (देखिए गिडन्स, 1978:21.23)।

इस इकाई में हमने अभी तक यह देखा है कि दर्खाइम श्रम विभाजन को केवल आर्थिक ही नहीं, सामाजिक क्रिया भी मानता है। उसके अनुसार इसकी भूमिका आधुनिक औद्योगिक समाज को एकजुट बनाना है। जो भूमिका सामूहिक चेतना यांत्रिक एकात्मता के मामले में निभाती थी, वहीं भूमिका श्रम विभाजन सावयविक एकात्मता के लिए निभाता है। श्रम विभाजन का जन्म बढ़ती हुए भौतिक तथा नैतिक सघनता के कारण उपजी अस्तित्व की होड़ से होता है। विशेषज्ञता ऐसी स्थिति का निर्माण कर सकती है जिसमें विभिन्न व्यक्ति एक-साथ रह सकते हैं और परस्पर सहयोग कर सकते हैं। परन्तु समकालीन यूरोपीय समाज में श्रम-विभाजन के भिन्न और नकारात्मक परिणाम सामने आए। सामाजिक व्यवस्था के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया।

दर्खाइम इस स्थिति को श्रम विभाजन के सामान्य रूप से पृथकता का नाम देता है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, वह इसे तीन रूपों में परिभाषित करता है। ये रूप हैः

(i) प्रतिमानहीनता जिसमें श्रम विभाजन से संबंधित नए नियम तथा सिद्धांत अस्तित्व में नहीं आते, (ii) असमानता, जिसके फलस्वरूप असंतोष, तनाव और संघर्ष पैदा होता हैं, और (iii) अपर्याप्त संगठन, जिससे श्रम का बंटवारा निरर्थक बन जाता है और बिखराब तथा विखंडन को बल मिलता है।

आइए, अब हम अगले भाग की ओर बढ़ें तथा श्रम विभाजन के बारे में कार्ल मार्क्स के विचारों का अध्ययन करें। किन्तु उससे पूर्व बोध प्रश्न 2 को पूरा कीजिए।

बोध प्रश्न 2

i) निम्नलिखित कथनों में से सही अथवा गलत बताइए।

क) ऑगस्ट कॉम्ट ने सामाजिक एकता की व्याख्या व्यक्तिगत हितों के संदर्भ में की। सही / गलत

ख) दर्खाइम मानता था कि नैतिक सर्वसम्मति आधुनिक औद्योगिक समाज को बांधे हुए हैं। सही / गलत

ग) दर्खाइम के अनुसार, व्यक्तिवाद तथा सामाजिक एकीकरण एक-दूसरे के शत्रु हैं। सही / गलत

घ) दर्खाइम के अनुसार, सावयविक एकात्मता में सामूहिक चेतना और सुदृढ़ हो जाती है। सही / गलत

ii) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर चार पंक्तियों में दीजिए।

क) दर्खाइम के अनुसार सावयविक एकात्मता यांत्रिक एकात्मता से उच्च क्यों हैं?

....

....

....

....

....

ख) भौतिक तथा नैतिक सघनता श्रम विभाजन का कारण कैसे बनती हैं ?

....

....

....

....

....

ग) प्रतिमानहीनता से दर्खाइम का क्या अभिप्राय हैं?

....

....

....

....

....

9.4 श्रम विभाजन पर मार्क्स के विचार

अगले उप-भागों में हमने निम्नलिखित पक्षों को मार्क्स की दृष्टि से समझने का प्रयास किया है :

i) सामाजिक श्रम विभाजन तथा उद्योग अथवा निर्माण में श्रम विभाजन के बीच मार्क्स द्वारा किया गया भेद।

ii) औद्योगिक श्रम विभाजन के विभिन्न पक्ष।

iii) श्रम विभाजन से उत्पन्न समस्याओं के लिए मार्क्स के समाधान आर्थात् क्रांति और परिवर्तन।

9.4.1 सामाजिक श्रम विभाजन तथा औद्योगिक श्रम विभाजन

सबसे पहले यह समझना होगा कि मार्क्स के अनुसार श्रम विभाजन का अर्थ क्या है। मार्क्स ने अपनी पुस्तक *कैपीटल* के पहले भाग में इस विषय का विवेचन करते हुए श्रम विभाजन के दो प्रकारों का उल्लेख किया है। ये दो प्रकार हैं: सामाजिक श्रम विभाजन और औद्योगिक श्रम विभाजन।

i) **सामाजिक श्रम विभाजन**: यह सभी समाजों में विद्यमान है। यह ऐसी प्रक्रिया है जिसका होना अनिवार्य है ताकि किसी समाज के सदस्य सामाजिक एंव आर्थिक जीवन को व्यवस्थित बनाए रखने के लिए आवश्यक कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकें। यह समाज में श्रम के सभी उपयोगी रूपों को विभाजित करने की जटिल प्रणाली है। उदाहरण के लिए कुछ लोग किसान हैं जो खाद्य पदार्थ का उत्पादन करते हैं और कुछ हस्तशिल्प की वस्तुएं तो कुछ हथियार एंव अन्य सामान तैयार करते हैं।

सामाजिक श्रम विभाजन से विभिन्न समूहों के बीच वस्तुओं के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता हैं। उदाहरण के लिए कुम्हार द्वारा बनाए गए मिट्टी के बर्तनों के बदले किसान के चावल या बुनकर से कपड़ा प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार के लेन-देन से विशेषज्ञता पनपती है।

ii) **औद्योगिक श्रम विभाजन**: यह प्रक्रिया औद्योगिक समाजों में विद्यमान हैं, जहां पूँजीवाद तथा उत्पादन की फैक्टरी व्यवस्था प्रचलित है। इस प्रक्रिया में किसी वस्तु के निर्माण को अनेक प्रक्रियाओं में बांट दिया जाता है। प्रत्येक श्रमिक का काम एक छोटी प्रक्रिया (जैसे कि एसेम्बली लाइन का काम) तक सीमित रहता है। यह काम सामान्यतः नीरस तथ उकता देने वाला होता है। श्रम के इस विभाजन का उद्देश्य एकदम सरल है। यह है उत्पादकता बढ़ाना। जितनी अधिक उत्पदाकता होगी, उतना ही ज्यादा उससे उत्पन्न अतिरिक्त मूल्य (surplus value) होगा। यह अतिरिक्त मूल्य ही पूँजीपतियों को अपनी उत्पादन प्रक्रिया को इस प्रकार नियोजित करने की प्रेरणा देता है, जिससे कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन किया जाए। आधुनिक औद्योगिक समाजों में श्रम विभाजन के बल पर ही माल का व्यापक स्तर पर उत्पादन हो रहा है। सामाजिक श्रम विभाजन में स्वतंत्र उत्पादक अपनी वस्तुएं तैयार कर दूसरे स्वतंत्र निर्माताओं के साथ उनका आदान-प्रदान करते हैं, किन्तु औद्योगिक श्रम विभाजन भिन्न हैं इसमें कामगार का अपने उत्पाद से कोई सरोकार नहीं रहता। आइए अब हम इस मुद्दे पर अधिक विस्तार से अध्ययन करें जिससे औद्योगिक श्रम विभाजन के परिणाम को समझा जा सकता हैं। औद्योगिक श्रम विभाजन को पूरी तरह से समझने हेतु सोचिए और करिए 2 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 2

किसी कारखाने अथवा हस्त-शिल्प उद्योग में श्रम विभाजन और उसके संभावित परिणामों का अध्ययन कीजिए। इसके आधार पर लगभग दो पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए। यदि संभव हो तो अध्ययन केन्द्र के अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणियों से अपनी टिप्पणी का मिलान कीजिए।

9.4.2 औद्योगिक श्रम विभाजन के परिणाम

i) **लाभ पूँजीपतियों के हिस्से में**: जैसा कि पहले बताया गया हैं, औद्योगिक श्रम विभाजन से अतिरिक्त मूल्य के अधिक से अधिक उत्पादन में सहायता मिलती हैं, जिससे पूँजी की मात्रा बढ़ती जाती है। मार्क्स ने अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न किया है कि लाभ किसके हिस्से में जाता हैं ? उसके अनुसार लाभ पर उनका हक नहीं हैं, जो वास्तव में उत्पादन करते हैं, बल्कि पूँजीपतियों के हिस्से में जाता है। लाभ पर उनका हक नही हैं, जो वास्तव में उत्पादन करते हैं, बल्कि उनका कहना है जिनका उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण है। मार्क्स के अनुसार श्रम विभाजन तथा निजी सम्पत्ति की प्रथा ये दोनों तत्व मिलकर पूँजीपति की ताकत को और मजबूत करते हैं। चूंकि उत्पादन के साधनों का मालिक पूँजीपति हैं, इसलिए उत्पादन की प्रक्रिया इस ढंग निर्धारित की जाती है कि उसका अधिकतम लाभ पूँजीपति को ही मिले।

ii) **कामगारों का अपने उत्पादन पर नियंत्रण नहीं रहता**: मार्क्स के अनुसार, निर्माण में श्रम विभाजन के फलस्वरूप श्रमिक का उत्पादन के वास्तविक निर्माता का दर्जा समाप्त हो जाता है। इसके विपरित, वे पूँजीपतियों द्वारा तैयार की गई उत्पादन श्रृंखला की एक कड़ी मात्र बन जाते हैं। (देखिये चित्र 20.2: उत्पादन में श्रम विभाजन)। श्रमिकों को उनके अपने श्रम से बनाई गई वस्तु से अलग कर दिया जाता है। सच तो यह है कि वे अपने श्रम में अंतिम परिणाम को देख तक नहीं पाते। उसके क्रय-विक्रय पर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता। उदाहरण के लिए भारत में वांशिग मशीन के कारखाने की असेम्बली लाइन में काम करने वाला मज़दूर क्या अंतिम रूप

से तैयार वांशिग मशीन को देख पाता है। हाँ हो सकता है किसी विज्ञापन अथवा दुकान में रखी वांशिग मशीन को वह देख लेता है। वह उस मशीन के निर्माण की प्रक्रिया का एक छोटा सा हिस्सा मात्र है और न उसे बेचने में उसकी कोई दखल है और न ही वह उसे खरीद पाने में सक्षम है। उस पर वास्तविक नियंत्रण पूँजीपतियों का है। स्वतंत्र निर्माता या उत्पादक के रूप में श्रमिक का अस्तित्व मिट चुका है। उत्पादन प्रक्रिया ने श्रमिक को गुलाम बना दिया है।

iii) **श्रमिक वर्ग का अमानवीकरण**: श्रम विभाजन से युक्त पूँजीवादी प्रणाली में वस्तुओं के स्वतंत्र उत्पादक के रूप में श्रमिकों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। वे उत्पादन के लिए आवश्यक श्रम शक्ति के पूर्तिकर्ता मात्र रह जाते हैं। श्रमिकों का अलग व्यक्तित्व उसकी जरूरतें तथा इच्छाएँ पूँजीपति के लिए कोई महत्व नहीं रखतीं। पूँजीपति की चिंता यही रही है कि मज़दूरी या वेतन के बदले पूँजीपति श्रमिक की श्रम-शक्ति मिलती रहे। मार्क्स के अनुसार श्रमिक वर्ग का मानव-रूप इस प्रकार विलुप्त हो जाता है और श्रम-शक्ति एक वस्तु बन कर रह जाती है जिसे पूँजीपति द्वारा खरीदा जाता है।

iv) **अलगाव**: मार्क्स ने औद्योगिक जगत की यथार्थ स्थितियों को समझने की जो अवधारणाएँ विकसित की हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण अवधारणा है अलगाववाद जिसके बारे में खंड 2 में जानकारी दी जा चुकी है।

उत्पादन तथा श्रम विभाजन की प्रक्रिया श्रमिक को उकता देने वाले काम बार-बार करने को विवश करती हैं। श्रमिक का अपने ही काम पर कोई नियंत्रण नहीं होता। जिस वस्तु का निर्माण होता है, उसकी उत्पादन प्रक्रिया के श्रमिक भाग हैं परंतु उससे तथा अपने सहयोगी श्रमिकों और अंततः पूरे समाज से श्रमिक एक तरह से कट जाते हैं (देखे कोलकोवस्की 1978:281.287)। नियंत्रण रहने, अमानवीय और अलगाव आदि की समस्याओं का क्या कोई समाधान है? मार्क्स का कहना है कि निजी सम्पत्ति की व्यवस्था समाप्त करना और वर्ग-विहीन समाज की रचना से ही इन समस्याओं का समाधान होगा।

9.4.3 मार्क्स द्वारा समस्या का हलः क्रांति और बदलाव

क्या श्रमिक को उत्पादन प्रक्रिया का गुलाम बनने को विवश किया जाये ? क्या श्रमिकों की रचनात्मक शक्ति तथा उनके अपने काम पर नियंत्रण को समाप्त करके उन पर श्रम विभाजन हमेशा के लिए थोपा जा सकता है ? मार्क्स का कहना है कि सामाजिक श्रम विभाजन का जारी रहना आवश्यक है ताकि मानव जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। परन्तु औद्योगिक श्रम विभाजन को नया रूप देना होगा। सर्वहारा वर्ग की क्रांति के माध्यम से निजी सम्पत्ति को समाप्त करके श्रमिक वर्ग अपने ऊपर थोपे गए श्रम विभाजन से मुक्ति पा सकता है। मार्क्स की मान्यता है कि साम्यवादी समाज की स्थापना से उत्पादन के साधनों पर श्रमिकों का स्वामित्व एंव नियंत्रण हो सकेगा। पुनर्गठित उत्पादन प्रक्रिया के फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता को पहचानेगा और अपनी रचनात्मक शाक्ति का उपयोग करेगा। मार्क्स की मान्यता है कि साम्यवादी समाज की स्थापना से उत्पादन के साधनों पर श्रमिकों का स्वामित्व एंव नियत्रंण हो सकेगा। पुनर्गठित उत्पादन प्रक्रिया के फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता को पहचानेगा और अपनी रचनात्मक शक्ति का उपयोग करेगा। मार्क्स और ऐंगल्स (जर्मन *आइडियोलॉजी*, भाग 1, अनुभाग I.A.I) ने अपने दृष्टिकोण को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया है।

साम्यवादी समाज में, जिसमें किसी व्यक्ति का कोई विशिष्ट कार्यक्षेत्र नहीं होता, किन्तु, प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी कार्य में दक्षता प्राप्त कर सकता हैं, समाज

ही सामान्य उत्पादन को नियंत्रित करता है और इस प्रकार मेरे लिए यह संभव हो जाता है कि मैं आज एक काम करूँ तथा कल कोई और कार्य कर सकूं। संभव है कि मैं सबेरे शिकार पर निकल जाऊँ, दोपहर बाद मछली पकडूं, शाम को पशु-पालन करूं और रात्रिभोज के पश्चात् आलोचना करूं। ये सभी काम शिकारी, मछुआरा, चरवाहा या आलोचक कहलाए बिना अपनी इच्छा के अनुसार करना मेरे लिए संभव है।

इस चर्चा में हमने देखा कि कार्ल मार्क्स ने सामाजिक श्रम विभाजन और औद्योगिक श्रम विभाजन में किस प्रकार भेद किया। सभी समाजों में भौतिक जीवन के आधार के लिए सामाजिक श्रम विभाजन आवश्यक है। किन्तु औद्योगिक श्रम-विभाजन औद्योगीकरण तथा पूँजीवाद के विकास के कारण ही अस्तित्व में आता है।

उत्पादन में श्रम विभाजन के अस्तित्व के निम्नलिखित पक्ष हैं।

i) लाभ पूँजीपति के हिस्से में जाता है।

ii) श्रमिकों का अपने उत्पादों पर नियंत्रण नहीं रहता।

iii) श्रमिक वर्ग का अमानवीकरण होता है।

iv) सभी स्तरों पर अलगाव पैदा होता हैं।

इन समस्याओं से निपटने के लिए मार्क्स ने ''सर्वहारा की क्रांति'' का उद्घोष किया, जिसमें निजी सम्पत्ति समाप्त हो जाएगी और उत्पादन के साधनों का स्वामित्व मज़दूरों के हाथों में चला जाएगा। इसके फलस्वरूप उत्पादन प्रक्रिया स्वयं श्रमिकों द्वारा विकसित और संचालित हो सकेगी तथा श्रमिकों को अपनी रचनात्मक शाक्ति को इस्तेमाल करने और विभिन्न कार्यों में श्रेष्ठता प्राप्त करने के अवसर मिल सकेगे। उकता देने वाली तथा शोषक कार्य पद्धति उनपर नहीं थोपी जाएगी।

आइए, अब बोध प्रश्न 3 को पूरा करें।

बोध प्रश्न 3

i) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर तीन पंक्तियों में दीजिए।

क) ''सामाजिक श्रम विभाजन'' से मार्क्स का क्या अभिप्राय था ?

....

....

....

....

....

ख) औद्योगिक श्रम विभाजन के फलस्वरूप श्रमिक अपने उत्पादों पर नियंत्रण खो देते है।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

ii) सही विकल्प पर निशान लगाइए।

क) मार्क्स के अनुसार, श्रमिक वर्ग का अमानवीकरण हो जाता है क्योंकि

i) कारखानों में मशीनों से काम होने लगता है।

ii) श्रमिकों को श्रम-शक्ति का पूर्तिकर्ता मात्र समझा जाता है।

iii) श्रमिक अपने द्वारा निर्मित वस्तुए नहीं खरीद सकते।

ख) उत्पादन के प्रति श्रमिक अलगाव महसूस करते हैं क्योंकि

i) उन्हें एक जैसे काम बार-बार करने पड़ते हैं।

ii) लाभ में उनका कोई हिस्सा नहीं होता और अपने उत्पादों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता।

iii) वे वेतन के बदले अपनी श्रम शक्ति बेचते हैं।

ग) साम्यवादी क्रांति के फलस्वरूप

i) श्रम विभाजन पूर्णतया समाप्त हो जाएगा।

ii) औद्योगिक श्रम विभाजन में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

iii) उत्पादन प्रक्रिया स्वंय श्रमिकों द्वारा विकसित और संचालित होगी।

9.5 दर्खाइम तथा मार्क्स के विचारों की तुलना

हमने श्रम विभाजन के बारे में दर्खाइम तथा मार्क्स के विचारों का अलग-अलग अध्ययन किया है। आइए, अब हम उनके विचारों का तुलानात्मक अध्ययन करें। आसानी के लिए निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत श्रम विभाजन पर दोनों चिंतकों के विचारों की तुलना की जा रही है।

i) श्रम विभाजन के कारण

ii) श्रम विभाजन के परिणाम

iii) श्रम विभाजन से संबंधित समस्याओं के समाधान

iv) समाज के बारे में दर्खाइम का प्रकार्यात्मक मॉडल और मार्क्स का संघर्ष मॉडल

9.5.1 श्रम विभाजन के कारण

दर्खाइम और मार्क्स, दोनों ने सरल पारम्परिक समाज और जटिल औद्योगिक समाज में विद्यमान श्रम विभाजन में स्पष्ट भेद किया है। श्रम विभाजन किसी भी समाज के सामाजिक-आर्थिक जीवन का अनिवार्य अंग है। किन्तु उन्होंने औद्योगिक समाजों में होने वाले श्रम विभाजन पर ही अधिक ध्यान दिया है।

दर्खाइम के अनुसार, औद्योगिक समाजों में श्रम विभाजन भौतिक तथा नैतिक सघनताओं में वृद्धि का परिणाम है। जैसा कि हमने पहले पढ़ा वह विशेषज्ञता अथवा श्रम विभाजन को एक साधन मानता है जिसके जरिए स्पर्धा या अस्तित्व के संघर्ष को कम किया जा सकता है। विशेषज्ञता ऐसा गुण है जिससे बड़ी संख्या में लोगों के लिए बिना लड़ाई-झगड़े के मिल-जुलकर रहना संभव होता है क्योंकि समाज में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी विशिष्ट भूमिका रहती है। इससे सामूहिकता और सह-अस्तित्व का विकास होता है।

मार्क्स भी उत्पादन में श्रम विभाजन को औद्योगिक समाज की एक विशेषता मानता है, परन्तु उसकी मान्यता दर्खाइम की मान्यता से भिन्न है। वह इसे सहयोग एंव सह-अस्तित्व का साधन नहीं मानता है। इसके विपरित, उसकी धारणा यह है कि श्रम विभाजन श्रमिकों पर थोपी गई एक प्रक्रिया है ताकि लाभ पूँजीपति के हिस्से में जाए। वह इस प्रक्रिया को निजी सम्पत्ति के अस्तित्व के साथ जोड़ता है। इससे उत्पादन के साधनों पर पूँजीपति का नियंत्रण रहता है। इसीलिए पूँजीपति ऐसी प्रक्रिया तैयार करते हैं। जिसमें उनकों अधिक से अधिक लाभ मिले। इस प्रकार श्रम विभाजन को श्रमिकों पर थोपा जाता है। मज़दूर वेतन के बदले अपनी श्रम-शक्ति बेचते हैं। उनमें एक जैसे उकता देने वाले तथा एक ही तरह के काम कराए जाते हैं। ताकि उत्पादकता बढ़ने के साथ-साथ पूँजीपति के लाभ में भी वृद्धि हो।

संक्षेप में, दर्खाइम की मान्यता है कि श्रम विभाजन के कारण इस तथ्य में निहित हैं कि औद्योगिक समाज को बनाए रखने के लिए व्यक्ति को सहयोग करने तथा विभिन्न प्रकार के काम करने की आवश्यकता है। मार्क्स के अनुसार श्रम विभाजन श्रमिकों पर थोपी गई प्रक्रिया हैं, जिसका उद्देश्य पूँजीपति का लाभ बढ़ाना है। दर्खाइम सहयोंग पर बल देता हैं, जबकि मार्क्स ने शोषण एंव संघर्ष पर ध्यान केंद्रित किया हैं।

9.5.2 श्रम विभाजन के परिणाम

आधुनिक औद्योगिक समाजों में श्रम विभाजन के कारणों के संबंध में दृष्टिकोण भिन्न होने के कारण श्रम विभाजन के परिणामों के मामले में भी दर्खाइम और मार्क्स के दृष्टिकोण में अंतर होना स्वाभाविक है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया हैं, दर्खाइम श्रम विभाजन को ऐसी प्रक्रिया मानता हैं, जो लोगों में सहयोग एंव सह-अस्तित्व विकसित करने में सहायक हैं। हमने पहले ही पढ़ा है कि किसी प्रकार वह श्रम विभाजन को सामाजिक एकीकरण की शक्ति मानता है, जिससे एकात्मका को बढ़ावा मिलता है। ''सामान्य'' स्थिति में श्रम विभाजन से प्रत्येक व्यक्ति का अपनी विशेष भूमिका निभाते हुए सामाजिक एकात्मता में योगदान होता है। प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने विशिष्ट क्षेत्र में रचनात्मक और नवोन्मुखता की अपनी शक्ति का विकास हो सकता है। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति की समाज पर अधिकाधिक निर्भरता होगी और परस्पर पूरक कार्य किये जायेगे। इस प्रकार, सामाजिक बंधन अधिक पक्के तथा स्थायी होते जाते हैं।

दर्खाइम के अनुसार, श्रम का अपर्याप्त संगठन एंव असमानता पर आधारित मानक शून्य विभाजन श्रम विभाजन का व्याधिकीय अथवा असामान्य रूप है। इस प्रकार के रूप वास्तविक श्रम विभाजन के परिणाम नहीं हैं। ये समाज की अस्थिरता के परिणाम हैं। नए आर्थिक संबंधों के नियम और सिद्धांत अभी व्यवहार में नहीं आए हैं। आर्थिक क्षेत्र में बड़ी तीव्रता से परिवर्तन हो रहा है, किन्तु इसे सही दिशा देने वाले नए नियम-कानून अभी व्यवस्थित रूप में विकसित नहीं हुए हैं।

दूसरी ओर, मार्क्स की दृष्टि में श्रम विभाजन पूँजीपतियों द्वारा श्रमिकों पर थोपी गई एक प्रक्रिया है। जैसा कि हमने पहले भी पढ़ा हैं, इसके फलस्वरूप श्रमिक वर्ग का अमानवीकरण हो जाता है। अलगाववाद उभर जाता है। श्रमिक व्यक्ति की बजाय वस्तु के रूप में देखे जाते हैं। उनकी सृजनात्मकता छीन ली जाती है और अपनी ही उत्पादों के नियंत्रण से वे वंचित हो जाते हैं। उनका श्रम सामग्री का रूप ले लेता है। जिसे बाज़ार में खरीदा और बेचा जा सकता है। इस प्रकार वे स्वंय उत्पादक न रह सका उत्पादन प्रक्रिया का अंग मात्र

बन जाते हैं। उनके नियोजकों यानी मालिकों के लिए उनके व्यक्तित्तव और उनकी समस्याओं का कोई महत्व नहीं रहता। उन्हें काम करने की मशीन से अधिक कुछ नहीं समझा जाता। इस प्रकार उनका पूर्णतया अमानवीकरण हो जाता है। वे एक ऐसी व्यवस्था के अंग होते हैं। जिसके नियंत्रण से वे वंचित हैं, जिसके परिणामस्वरूप सभी स्तरों पर अलगाव महसूस करते हैं, अपने काम से लेकर साथियों और सामाजिक व्यवस्था तक से वे कट जाते हैं।

संक्षेप में, दर्खाइम की नज़र में श्रम विभाजन ऐसी प्रक्रिया हैं, जो सामाजिक सामंजस्य का आधार बन सकती हैं। मार्क्स के अनुसार, यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे श्रमिक का अमानवीकरण होता है और अलगाव बढ़ जाता है तथा उत्पादक का अपनी रचना से संबंध टूट जाता है। श्रमिकों को जिस व्यवस्था का स्वामी होना चाहिए, उसके ही वे गुलाम बन कर रह जाते हैं।

9.5.3 श्रम विभाजन से संबंधित समस्याओं के समाधान

जैसे कि हमने पढ़ा है दर्खाइम श्रम विभाजन को ऐसी प्रक्रिया मानता है जो सामान्य परिस्थितियों में समाजिक सामंजस्य का कारण बनती है। समाज में श्रम विभाजन के जो असामान्य रूप प्रचलित हो जाते हैं, उनको इस प्रकार सुधारा जाना चाहिए जिससें श्रम विभाजन सामाजिक एकीकरण की अपनी भूमिका निभा सके।

दर्खाइम का कहना है कि समाज में श्रमिकों को उनकी भूमिका के प्रति जागरूक बनाकर प्रतिमानहीनता की स्थिति को दूर किया जा सकता है। उनमें यह एहसास कराने से कि वे सामाजिक जीवन के अभिन्न अंग हैं, निरर्थक कार्य करने की उनकी कुंठा को दूर किया जा सकता है। तब यह निरर्थकता उनकी भूमिका के महत्व के प्रति चेतना का रूप ले लेगी। मार्क्स के अनुसार, पूँजीवाद ही वास्तव में मूल सामास्या है। श्रम विभाजन से अमानवीकरण, अलगाव और नियंत्रण के अभाव जैसी स्थितियां जन्म लेती है। इसका समाधान है क्रांति, जिसके माध्यम से उत्पादन के साधनों पर श्रमकों का फिर से नियंत्रण हो सकेगा। वे तब उत्पादन प्रक्रिया का विकास और संचालन इस ढंग से करेंगे कि अमानवीकरण और अलगाव जैसी समस्याएँ अतीत का विषय बन जाएँगी।

9.5.4 समाज के बारे में दर्खाइम का ''प्रकार्यात्मक'' मॉडल और मार्क्स का ''संघर्ष'' मॉडल

श्रम विभाजन के अध्ययन के आधार पर दर्खाइम ने समाज का प्रकार्यात्मक मॉडल विकसित किया। वह इसमें देखता है कि किस प्रकार सामाजिक संस्थाएं तथा प्रक्रियाएं समाज को बनाएं रखने में सहायक होती हैं। इसके बारे में आपने इसी खंड की इकाई 18 में पढ़ा है। दर्खाइम सामाजिक संतुलन के प्रश्न का स्पष्टीकरण देने का प्रयास करता है। हमें याद रखना चाहिए कि दर्खाइम के जीवन काल में समाज की व्यवस्था पर खतरे मंडरा रहे थे। इसलिए संभवतः उसका काम यह दिखाना था कि जो परिवर्तन हो रहे हैं उनसे समाज-व्यवस्था छिन्न-भिन्न नहीं होगी, बल्कि नए समाज में सामंजस्य लाने में सहायता मिलेगी। दर्खाइम श्रम विभाजन के आर्थिक पहलू मात्र को नहीं बल्कि उसके सामाजिक पहलू अर्थात् सामाजिक एकीकरण में उसके योगदान को भी महत्व देता है।

दूसरी और औद्योगीकरण की चुनौतियों के प्रति मार्क्स की प्रतिक्रिया एकदम भिन्न है। वह दर्खाइम की इस मान्यता से सहमत नहीं है कि समात मूलतः संतुलित स्थिति में है और समाजिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं का अस्तित्व केवल इसलिए है कि वे समाज को एक

बनाए रखने में सहायक है। मार्क्स मानव इतिहास को वर्ग संघर्ष अथवा शोषण एंव शोषितों के बीच संघर्षों की श्रृंखला का इतिहास मानता है। पूँजीवाद मानव इतिहास का एक चरण हैं, जिसमें बुर्जुआ वर्ग तथा सर्वहारा वर्ग के बीच संघर्ष चल रहा है। पूँजीवाद के अंतर्गत जो उत्पादन प्रणाली विद्यमान हैं, वह श्रमिकों को शोषण करने के लिए तैयार की गई है। श्रमिकों और पूँजीपतियों के हित आपस में टकराते हैं। मार्क्स को विश्वास है कि सर्वहारा की क्रांति से पुरानी व्यवस्था का पतन होगा और नई प्रणाली का सूत्रपात होगा। समाज के प्रति मार्क्स के दृष्टिकोण में विरोध, संघर्ष और परिवर्तन का प्रमुख स्थान है। इस अर्थ में मार्क्स ने समाज का संघर्ष मॉडल प्रस्तुत किया।

संक्षेप में, दर्खाइम की दृष्टि में समाज एक ऐसी व्यवस्था हैं, जो अपनी विभिन्न संस्थाओं के योगदान से एकजुट बनी रहती है। मार्क्स इतिहास को ''सम्पन्न'' और ''सर्वहारा'' वर्गों के बीच संघर्षों की श्रृंखला मानता हैं, जिसमें टकराव और परिवर्तन होता है। दोनों विद्वानों के दृष्टिकोण में मुख्य यही अंतर है।

आइए, इस बिंदु पर इकाई की मुख्य चर्चाए समाप्त होने के समय बोध प्रश्न 4 को पूरा कर लें।

बोध प्रश्न 4

i) निम्नलिखित कथनों की क्रम संख्याओं को निम्नलिखित तालिका के अ तथा ब में उपयुक्त शीर्षक के अंतर्गत लिखिए।

1) श्रम विभाजन शोषण पर आधारित है।
2) श्रम विभाजन से सहयोग पैदा होता है।
3) श्रम विभाजन सामाजिक एकता में सहायक है।
4) श्रम विभाजन श्रमिक को सब प्रकार के नियंत्रण से वंचित कर देता है।
5) श्रम विभाजन आधुनिक पूँजीवाद की विशेषता है।
6) औद्योगिक जगत की समस्याएं श्रम विभाजन का असामान्य रूप हैं।
7) पूँजीवाद स्वंय ही औद्योगिक जगत की समस्या है
8) असमानता पर आधारित श्रम विभाजन समाज में समस्याएँ पैदा करता हैं।

अ	ब
दर्खाइम का दृष्टिकोण	**मार्क्स का दृष्टिकोण**
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

ii) श्रम विभाजन विषय पर विचार के संदर्भ में दर्खाइम के ''प्रकार्यात्मक मॉडल'' और मार्क्स के ''संघर्ष मॉडल'' की तुलना कीजिए। अपना उत्तर छह पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

9.6 सारांश

हमने सबसे पहले यह पढ़ा कि ''श्रम विभाजन'' शब्द से क्या तात्पर्य है। इसके पश्चात् हमने श्रम विभाजन पर एमिल दर्खाइम के विचारों का अध्ययन किया। उसने ये विचार अपनी पुस्तक *डिवीज़न ऑफ़ लेबर इन सोसाइटी* में व्यक्त किए। इस पुस्तक में व्यक्त मुख्य बातों को निम्नलिखित शीर्षकों में वर्गीकृत किया गया।

i) श्रम विभाजन के कार्य

ii) श्रम विभाजन के कारण

iii) असामान्य रूप

इसके पश्चात् श्रम विभाजन पर कार्ल मार्क्स के विचारों की व्याख्या की गई हमने सामाजिक श्रम विभाजन तथा औद्योगिक श्रम विभाजन के बीच मार्क्स द्वारा बताए गए अंतर को समझा। हमने औद्योगिक श्रम विभाजन के विभिन्न पक्षों का भी अध्ययन किया, जा इस प्रकार है।

i) लाभ पूँजीपति के हिस्से में जाता है।

ii) श्रमिकों का अपने उत्पादों पर कोई नियंत्रण नहीं रहता।

iii) श्रमिक वर्ग का अमानवीकरण होता है।

iv) सभी स्तरों पर अलगाव महसूस किया जाता है।

इसके उपरांत हमने इन समस्याओं के लिए मार्क्स के सामाधान अर्थात क्रांति के बारे में पढ़ा जिससे साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना होगी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सष्जनात्मक क्षमता का विकास करने का अवसर मिलेगा।

अंत में हमने निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत दर्खाइम और मार्क्स के विचारों की तुलना की।

i) श्रम विभाजन के कारण

ii) श्रम विभाजन के परिणाम

iii) श्रम विभाजन से संबंधित समस्याओं का समाधान

iv) समाज के बारे में दर्खाइम का ''प्रकार्यात्मक'' मॉडल और मार्क्स का ''सघर्ष'' मॉडल।

9.7 संदर्भ

आरों, रेमों 1970. *मेन करंट्स इन सोशियोलॉजिकल थॉट.* भाग 1 और 2 (मार्क्स और दर्खाइम से संबंधित भाग देखिए), पेंगुइन बुक्सः लंदन

बॉटोमौर, टॉम (संपा.) 1983. *डिक्शनरी ऑफ़ मार्क्ससिस्ट थॉट*. ब्लैकवैलः ऑक्सफ़ोर्ड

गिड्डनस, एन्थनी 1978. *दर्खाइम.* हार्वेस्टर प्रेसः हैसॉक्स

9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) क) लघु, व्यापक

 ख) श्रम विभाजन

 ग) एडम स्मिथ

ii) क) ग़लत

 ख) ग़लत

 ग) सही

बोध प्रश्न 2

i) क) ग़लत

 ख) ग़लत

 ग) ग़लत

 घ) ग़लत

iii) क) यांत्रिक एकात्मता समरूपता पर आधारित है। सायविक एकात्मता भिन्नताओं तथा भिन्नताओं की पूरकता पर आधारित है। इस प्रकार, व्यक्ति नवोन्मुखी भी हो सकते हैं और साथ ही दूसरे व्यक्तियों तथा समाज पर निर्भर भी। इस तरह, व्यक्तिवाद और सामाजिक सांमजस्य एक-साथ रह सकते हैं। अतः दर्खाइम ने सावयविक एकात्मता को उच्च स्तर की एकात्मता माना हैं।

 ख) भौतिक तथा नैतिक सघनता समाज के लोगों को एक-दूसरे के निकट संपर्क में लाती हैं। अस्तित्व के लिए और कम मात्रा में उपलब्ध साधनों के लिए संघर्ष छिड़ सकता हैं। सह-अस्तित्व के लिए व्यक्ति अलग-अलग क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल करते हैं और इस प्रकार श्रम का विभाजन होता है। इस प्रकार, दर्खाइम के अनुसार भौतिक और नैतिक संघनता के फलस्वरूप श्रम का विभाजन होता हैं।

 ग) दर्खाइम के अनुसार, प्रतिमानहिनता (दवउपम) असामान्य रूप हैं। यह वह स्थिति हैं, जिसमें लगता है कि सभी नियम कानून टूट चुके हैं। उदाहरण के लिए व्यक्तियों को काम करना पड़ता है और उत्पादन जारी रखना होता हैं, परन्तु कोई नए नियम लागू नहीं किए जाते। उन्हें समझ नहीं आता कि उनके काम का क्या अर्थ अथवा उद्देश्य हैं।

बोध प्रश्न 3

i) क) सामाजिक श्रम विभाजन समाज में उपयोगी श्रम के सभी रूपों का बंटवारा करने की एक जटिल प्रक्रिया है। कुछ लोग अनाज पैदा करते हैं तो दूसरे हस्तशिल्प की वस्तुएं बनाते है। इसमें वस्तुओं के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है और सामाजिक तथा आर्थिक जीवन के संचालन के लिए यह अनिवार्य है।

ख) निर्माण में श्रम विभाजन से श्रमिक उत्पादन प्रक्रिया का छोटा सा हिस्सा बन जाते हैं। उत्पादों से श्रमिक का कोई सरोकार नहीं रहता। वह उसे बेच नहीं सकते और प्रायः उसे खरीद पाने की स्थिति में भी नहीं होते। वे वस्तुओं के उत्पादन की प्रक्रिया के स्वामी बनने के बजाय गुलाम बन जाते हैं।

i) क) ii) ख) i) ग) iii)

बोध प्रश्न 4

i)

दर्खाइम का दृष्टिकोण	मार्क्स का दृष्टिकोण
(2)	(1)
(3)	(4)
(6)	(5)
(8)	(7)

ii) एमिल दर्खाइम के समाज के ''प्रकार्यात्मक'' मॉडल से हमारा अभिप्राय उस विधि से हैं, जिसमें उसने सामाजिक सांमजस्य बनाए रखने में सामाजिक संस्थाओं के योगदान का अध्ययन किया। इस मॉडल के अनुरूप उसने श्रम विभाजन का केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि सामाजिक प्रक्रिया के रूप में अध्ययन किया। उसने यह दिखाने का भी प्रयास किया कि किस तरह यह प्रक्रिया सामाजिक सामंजस्य में योग देती हैं।

दूसरी ओर, कार्ल मार्क्स ने समाज का अध्ययन विरोध, संघर्ष और परिवर्तन के संदर्भ में किया। मानव इतिहास में एक समूह दूसरे समूह के शोषण का शिकार होता रहा है। श्रम विभाजन एक ऐसी प्रक्रिया हैं, जिसके ज़रिए पूँजीपति श्रमिकों का शोषण करते हैं। यह दृष्टिकोण मार्क्स के ''संघर्ष'' मॉडल को व्यक्त करता हैं।